दिनांक 19.06.2017 को केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, राँची के स्थापना दिवस के अवसर पर माननीया राज्यपाल महोदया का अभिभाषण

Central Tasar Research & Training Institute, Ranchi के 54th Foundation Day के अवसर पर आयोजित समारोह में सम्मिलित होकर मुझे अपार प्रसन्नता हो रही है। तसर रेशम के research एवं विकास कार्य हेतु स्थापित इस Institute की देश में Tasar Industry के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। हमारा राष्ट्र तसर रेशम उत्पादन के क्षेत्र में अहम स्थान रखता है।

जहाँ तक हमारे राज्य की बात है, तसर रेशम कीटपालन जनजातीय समुदाय एवं निर्धन ग्रामीणों का पारम्परिक पेशा रहा है। इस प्रकार यह उद्योग हमारे किसान भाई एवं महिलाएँ जुड़कर सशक्त हो रहे हैं। यह उनके लिए आजीविका एवं अतिरिक्त आय का साधन है। इनके द्वारा पहले पारम्परिक विधि से कीटपालन कार्य किया जाता था जिससे सीमित उत्पादन होता था। हाल के वर्षों में तसर रेशम संवर्धन में लोगों की भागीदारी बढ़ी है। वे अब जागरूक होकर वैज्ञानिक विधि से कीटपालन करने लगे हैं। फलस्वरूप तसर रेशम के उत्पादन में बढ़ोतरी हुई है। साथ ही किसानों की आय में भी वृद्धि हुई है तथा इससे निर्धन ग्रामीणों के जीवन स्तर एवं उनके सामाजिक–आर्थिक स्थिति में स्पष्ट बदलाव आया है। वन आधारित यह उद्योग विशेषकर सुदूर ग्रामीण क्षेत्र अर्थात् यातायात की सुविधा से वंचित कस्बों, गाँवों के निर्धन कृषकों के लिए वरदान सिद्ध हुआ है जिसके माध्यम से वे प्राकृतिक रूप से उगे पौधों अथवा लगाये गये

खाद्य पौधों पर तसर रेशम की खेती कर अतिरिक्त आय का अर्जन करते हैं।

विगत कुछ दशकों में संस्थान द्वारा विकसित उन्नत तकनीकों को अपनाकर किसानों ने अधिक आय अर्जित कर अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ किया है। राज्य के द्वारा देश में सर्वाधिक तसर रेशम के उत्पादन के साथ ही झारखण्ड अब देश की तसर रेशम की राजधानी के रूप में जाना जाने लगा है। झारखण्ड में उत्पादित तसर रेशम की देश के अलावा विदेशों में भी भारी माँग है। अब राज्य सरकार झारखण्ड के तसर रेशम को एक ब्रांड के रूप में विकसित कर विश्व में निर्यात करने की योजना पर गंभीरता से कार्य कर रही है।

इस अवसर पर मैं संस्थान के वैज्ञानिकों का आह्वान करूँगी कि वे अल्प–लागत वाली लाभकारी तकनीकों का विकास करें जो प्रत्येक भौगोलिक क्षेत्र में प्रभावी सिद्ध हो। जलवायु परिवर्तन, बढ़ते हुए तापमान, अतिवृष्टि एवं अनावृष्टि जैसी प्राकृतिक आपदाओं को ध्यान में रखते हुए यह कार्य दुष्कर एवं चुनौती भरा अवश्य है, परंतु हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि संस्थान के वैज्ञानिक किसानों की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए उसका व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करेंगे जिससे तसर उद्योग के द्वारा किसानों के जीवन में और अधिक खुशहाली लायी जा सके।

जय जवान! जय किसान! जय विज्ञान!